



आरती गणेशजी की

जय गणेश, जय गणेश, जय गणेश देवा।
माता जाकी पार्वती, पिता महादेवा ॥

एक दन्त दयावंत, चार भुजा धारी।
माथे पर तिलक सोहे, मुसे की सवारी ॥

पान चढ़े फुल चढ़े, और चढ़े मेवा।
लडुवन का भोग लगे, संत करे सेवा ॥

जय गणेश, जय गणेश, जय गणेश देवा।
माता जाकी पार्वती, पिता महादेवा ॥

अंधन को आँख देत, कोढ़िन को काया।
बांझन को पुत्र देत, निर्धन को माया ॥

सुर श्याम शरण आये, सफल किजे सेवा।
माता जाकी पार्वती, पिता महादेवा ॥

जय गणेश, जय गणेश, जय गणेश देवा।
माता जाकी पार्वती, पिता महादेवा ॥

बोलो श्री गणपति महाराज की... जय हो ।



आरती कुंजबिहारी की

आरती कुंजबिहारी की। श्री गिरिधर कृष्ण मुरारी की

गले में बैजंती माला
बजावै मुरली मधुर बाला
श्रवण में कुण्डल झलकाला
नंद के आनंद नंदलाला
श्री गिरिधर कृष्ण मुरारी की। आरती कुंजबिहारी की।

गगन सम अंग कांति काली
राधिका चमक रही आली
लतन में ठाढ़े बनमाली
भ्रमर सी अलक, कस्तूरी तिलक, चंद्र सी झलक
ललित छवि श्यामा प्यारी की
श्री गिरिधर कृष्ण मुरारी की
आरती कुंजबिहारी की। श्री गिरिधर कृष्ण मुरारी की

कनकमय मोर मुकुट बिलसै
देवता दरसन को तरसैं
गगन सों सुमन रासि बरसै
बजे मुरचंग, मधुर मिरदंग, ग्वालिन संग,
अतुल रति गोप कुमारी की
श्री गिरिधर कृष्णमुरारी की
आरती कुंजबिहारी की। श्री गिरिधर कृष्ण मुरारी की

जहां ते प्रकट भई गंगा
सकल मन हारिणि श्री गंगा
स्मरन ते होत मोह भंगा
बसी शिव सीस, जटा के बीच, हरै अघ कीच
चरन छवि श्रीबनवारी की
श्री गिरिधर कृष्णमुरारी की
आरती कुंजबिहारी की। श्री गिरिधर कृष्ण मुरारी की

चमकती उज्ज्वल तट रेनू
बज रही वृंदावन बेनू
चहुं दिसि गोपि ग्वाल धेनू
हंसत मृदु मंद, चांदनी चंद, कटत भव फंद
टेर सुन दीन दुखारी की
श्री गिरिधर कृष्णमुरारी की
आरती कुंजबिहारी की। श्री गिरिधर कृष्ण मुरारी की
बोलो श्री बाके बिहारी लाल की.... जय हो ।



आरती श्री शिव जी की

जय शिव ओंकारा ॐ जय शिव ओंकारा ।
ब्रह्मा विष्णु सदा शिव अर्द्धांगी धारा ॥
॥ ॐ जय शिव ओंकारा ॥

एकानन चतुरानन पंचानन राजे ।
हंसानन गरुडासन वृषवाहन साजे ॥
॥ ॐ जय शिव ओंकारा ॥

दो भुज चार चतुर्भुज दस भुज अति सोहे ।
त्रिगुण रूपनिरखता त्रिभुवन जन मोहे ॥
॥ ॐ जय शिव ओंकारा ॥

अक्षमाला बनमाला रुण्डमाला धारी ।
चंदन मृगमद सोहे भाले शशिधारी ॥
॥ ॐ जय शिव ओंकारा ॥

श्वेताम्बर पीताम्बर बाघम्बर अंगे ।
सनकादिक गरुणादिक भूतादिक संगे ॥
॥ ॐ जय शिव ओंकारा ॥

कर के मध्य कमंडलु चक्र त्रिशूल धर्ता ।
जगकर्ता जगभर्ता जगसंहारकर्ता ॥
॥ ॐ जय शिव ओंकारा ॥

ब्रह्मा विष्णु सदाशिव जानत अविवेका ।
प्रणवाक्षर मध्ये ये तीनों एका ॥
॥ ॐ जय शिव ओंकारा ॥

काशी में विश्वनाथ विराजत नन्दी ब्रह्मचारी ।
नित उठि भोग लगावत महिमा अति भारी ॥
॥ ॐ जय शिव ओंकारा ॥

त्रिगुण शिवजी की आरती जो कोई जन गावे । स्वामी प्रेम साहित गावे !!
कहत शिवानन्द स्वामी !! कहत हरिहर स्वामी , मनवांछित फल पावे ॥
॥ ॐ जय शिव ओंकारा ॥

बोलो श्री भोलेनाथ की... जय हो । पार्वती माता की... जय हो।



आरती माँ दुर्गा जी की

अम्बे तू है जगदम्बे काली, जय दुर्गे खप्पर वाली,
तेरे ही गुण गायेँ भारती, ओ मैया हम सब उतारे तेरी आरती

तेरे भक्त जनों पे माता भीड पड़ी है भारी
दानव दल पर टूट पड़ो माँ करके सिंह सवारी
सौ-सौ सिहों से भी बलशाली, अष्ट भुजाओं वाली,
दुष्टों को पल में संहारती
ओ मैया हम सब उतारे तेरी आरती

अम्बे तू है जगदम्बे काली, जय दुर्गे खप्पर वाली,
तेरे ही गुण गायेँ भारती, ओ मैया हम सब उतारे तेरी आरती

माँ-बेटे का है इस जग में बड़ा ही निर्मल नाता
पूत-कपूत सुने हैं पर ना माता सुनी कुमाता
सब पे करूणा दर्शाने वाली, अमृत बरसाने वाली
दुखियों के दुखड़े निवारती
ओ मैया हम सब उतारे तेरी आरती

अम्बे तू है जगदम्बे काली, जय दुर्गे खप्पर वाली,
तेरे ही गुण गायेँ भारती, ओ मैया हम सब उतारे तेरी आरती

नहीं मांगते धन और दौलत, न चांदी न सोना
हम तो मांगें माँ तेरे मन में एक छोटा सा कोना
सबकी बिगड़ी बनाने वाली, लाज बचाने वाली
सतियों के सत को संवारती
ओ मैया हम सब उतारे तेरी आरती

अम्बे तू है जगदम्बे काली, जय दुर्गे खप्पर वाली,
तेरे ही गुण गायेँ भारती, ओ मैया हम सब उतारे तेरी आरती

बोलो श्री दुर्गा माता की.... जय हो।



आरती श्री हनुमानजी की

आरती कीजै हनुमान लला की। दुष्ट दलन रघुनाथ कला की॥

जाके बल से गिरिवर कांपे।
रोग दोष जाके निकट न झांके॥
अंजनि पुत्र महा बलदाई।
सन्तन के प्रभु सदा सहाई॥
आरती कीजै हनुमान लला की। दुष्ट दलन रघुनाथ कला की॥

दे बीरा रघुनाथ पठाए।
लंका जारि सिया सुधि लाए॥
लंका सो कोट समुद्र-सी खाई।
जात पवनसुत बार न लाई॥
आरती कीजै हनुमान लला की। दुष्ट दलन रघुनाथ कला की॥

लंका जारि असुर संहारे।
सियारामजी के काज सवारे॥
लक्ष्मण मूर्छित पड़े सकारे।
आनि संजीवन प्राण उबारे॥
आरती कीजै हनुमान लला की। दुष्ट दलन रघुनाथ कला की॥

पैठि पाताल तोरि जम-कारे।
अहिरावण की भुजा उखारे॥
बाएं भुजा असुरदल मारे।
दाहिने भुजा संतजन तारे॥
आरती कीजै हनुमान लला की। दुष्ट दलन रघुनाथ कला की॥

सुर नर मुनि आरती उतारें।
जय जय जय हनुमान उचारें॥
कंचन थार कपूर लौ छाई।
आरती करत अंजना माई॥
आरती कीजै हनुमान लला की। दुष्ट दलन रघुनाथ कला की॥

जो हनुमानजी की आरती गावे।
बसि बैकुण्ठ परम पद पावे॥
आरती कीजै हनुमान लला की। दुष्ट दलन रघुनाथ कला की॥

बोलो श्री पवनपुत्र हनुमान की.. जय हो।

आरती श्री व्यंकटेश्वर भगवान की

श्रियः कान्ताय कळ्याण निधये निधयेऽर्थिनाम् ।
श्रीवेङ्कट निवासाय श्रीणिवासाय मङ्गळम् ॥ १ ॥

लक्ष्मी सविभ्रमालोक सुभू विभ्रम चक्षुषे ।
चक्षुषे सर्वलोकानां वेङ्कटेशाय मङ्गळम् ॥ २ ॥

श्रीवेङ्कटाद्रि शृङ्गाग्र मङ्गळाभरणाङ्घ्रये ।
मङ्गळानां निवासाय श्रीणिवासाय मङ्गळम् ॥ ३ ॥

सर्वावयव सौन्दर्य सम्पदा सर्वचेतसाम् ।
सदा सम्मोहनायास्तु वेङ्कटेशाय मङ्गळम् ॥ ४ ॥

नित्याय निरवद्याय सत्यानन्द चिदात्मने ।
सर्वान्तरात्मने शीमद्वेङ्कटेशाय मङ्गळम् ॥ ५ ॥

स्वतः सर्वविदे सर्व शक्तये सर्वशेषिणे ।
सुलभाय सुशीलाय वेङ्कटेशाय मङ्गळम् ॥ ६ ॥

परस्मै ब्रह्मणे पूर्णकामाय परमात्मने ।
प्रयुञ्जे परतत्त्वाय वेङ्कटेशाय मङ्गळम् ॥ ७ ॥

आकालतत्त्व मश्रान्त मात्मना मनुपश्यताम् ।
अतृप्यमृत रूपाय वेङ्कटेशाय मङ्गळम् ॥ ८ ॥

प्रायः स्वचरणौ पुंसां शरण्यत्वेन पाणिना ।
कृपयाऽऽदिशते श्रीमद्वेङ्कटेशाय मङ्गळम् ॥ ९ ॥

दयाऽमृत तरङ्गिण्या स्तरङ्गैरिव शीतलैः ।
अपाङ्गैः स्निञ्चते विश्वं वेङ्कटेशाय मङ्गळम् ॥ १० ॥

स्रग्भूषाम्बर हेतीनां सुषमाऽऽवहमूर्तये ।
सर्वार्ति शमनायास्तु वेङ्कटेशाय मङ्गळम् ॥ ११ ॥

श्रीवैकुण्ठ विरक्ताय स्वामि पुश्ककरिणीतटे ।
रमया रममाणाय वेङ्कटेशाय मङ्गळम् ॥ १२ ॥

श्रीमत्सुन्दरजा मातृमुनि मानसवासिने ।
सर्वलोक निवासाय श्रीणिवासाय मङ्गळम् ॥ १३ ॥

मङ्गळा शासनपरैर्मदाचार्य पुरोगमैः ।
सर्वैश्च पूर्वैराचार्यैः सत्कृतायास्तु मङ्गळम् ॥ १४ ॥

श्री पद्मावती समेत श्री श्रीणिवासपरब्रह्मणे नमः